अलविदा नायाब 'रतन'

भारत का रतन... 'टाटा' कहकर चला गया

देश के उद्योग जगत के सबसे नायाब 'रतन' यानी रतन टाटा नहीं रहे। उम्र से जुड़ी बीमारी के बाद 86 वर्ष की उम्र में उन्होंने मुंबई में अंतिम सांस ली। सोमवार को वे स्वास्थ्य जांच के लिए अस्पताल में भर्ती हुए थे। बाद में उन्होंने ही आईसीयू में भर्ती होने के दावों का खंडन कर दिया था। हालांकि, बुधवार को उन्हें एक बार फिर अस्पताल में भर्ती कराया गया था। डॉक्टरों की टीम उनके स्वास्थ्य पर लगातार नजर बनाए हुए थी, लेकिन तमाम कोशिशों के बाद भी उन्हें नहीं बचाया जा सका। रतन टाटा अपनी सादगी और सरल स्वभाव की वजह से जाने जाते थे। उदारीकरण के दौर के बाद टाटा समूह आज जिस ऊंचाइयों पर है, उसे यहां तक पहुंचाने में रतन टाटा बहुत बड़ा योगदान है। टाटा का जन्म 28 दिसंबर, 1937 को हुआ था। वे टाटा समूह के संस्थापक जमशेदजी टाटा के दत्तक पोते नवल टाटा के पुत्र थे।

समूह की तरफ से टाटा संस के चेयरमैन ने बयान जारी किया: टाटा के निधन पर इस औद्योगिक घराने के चेयरमैन एन चंद्रशेखरन ने बयान जारी किया। उन्होंने कहा, 'हम रतन नवल टाटा को बहुत ही गहरे दुख के साथ विदाई दे रहे हैं। वे वास्तव में असाधारण शख्सियत थे।

रतन टाटा

जन्म
28 दिसंबर 1937

शिक्षा
हार्वर्ड बिजनेस स्कूल से मैनेजमेंट की पढ़ाई की

सम्मान
पद्म विभूषण (2008)
पद्म भूषण (2000)

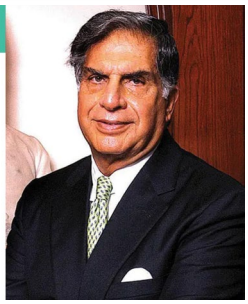

चंद्रशेखरन ने कहा, 'टाटा समूह के लिए, रतन टाटा एक अध्यक्ष से कहीं बढ़कर थे। मेरे लिए, वे एक गुरु, मार्गदर्शक और मित्र थे। उन्होंने उदाहरण के माध्यम से प्रेरित किया। उत्कृष्टता, अखंडता और नवाचार के प्रति अटूट प्रतिबद्धता के साथ, उनके नेतृत्व में टाटा समूह ने अपने नैतिक मानदंडों के प्रति हमेशा सच्चे रहते हुए वैश्विक स्तर पर विस्तार किया।

टाटा की पहल ने गहरी छाप छोड़ी, आने वाली पीढ़ियों को मिलेगा लाभ: चंद्रशेखरन ने कहा कि टाटा के परोपकार और समाज के विकास के प्रति समर्पण ने लाखों लोगों के जीवन को प्रभावित किया है। शिक्षा से लेकर स्वास्थ्य सेवा तक, उनकी पहल ने एक गहरी छाप छोड़ी है जो आने वाली पीढ़ियों को लाभान्वित करेगी। तमाम कार्यों को सुदृढ़ बनाने में टाटा के साथ हुई हर व्यक्तिगत बातचीत उनकी वास्तविक विनम्रता की मिसाल है। टाटा संस के चेयरमैन चंद्रशेखरन ने कहा, 'पूरे टाटा परिवार की ओर से, मैं उनके प्रियजनों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं। उनकी विरासत हमें प्रेरित करती रहेगी क्योंकि हम उन सिद्धांतों को बनाए रखने का प्रयास करते हैं जिनका उन्होंने इतने जुनून से समर्थन किया।'

हार्वर्ड बिजनेस स्कूल से की पढ़ाई: रतन टाटा ने स्कूली पढ़ाई-लिखाई मुंबई से की। इसके बाद वे कॉर्नेल यूनिवर्सिटी चले गए, जहां से उन्होंने आर्किटेक्चर में बीएस किया। रतन टाटा 1961-62 में टाटा ग्रुप जुड़े थे। इसके बाद उन्होंने हार्वर्ड बिजनेस स्कूल से एडवांस मैनेजमेंट प्रोग्राम से प्रबंधन की पढ़ाई की। 1991 में वे टाटा ग्रुप के चेयरमैन बने। साल 2012 में रिटायर हुए थे। भारत में पहली बार पूर्ण रूप से बनी कार का उत्पादन शुरू करने का श्रेय भी उन्हीं को जाता है। इस पहली पूर्ण स्वदेश निर्मित कार का नाम था टाटा इंडिका। दुनिया की सबसे सस्ती कार टाटा नैनो बनाने की उपलब्धि भी उन्हीं के नाम है। उनके नेतृत्व में ही टाटा समूह ने लैंड रोवर और जगुआर का अधिग्रहण कर अंतरराष्ट्रीय स्तर पर खलबली मचा दी थी। उन्हें पद्म विभूषण से भी सम्मानित किया गया था।

कभी टाटा स्टील की भट्ठी में चूना पत्थर डालने का काम किया, फोर्ड चेयरमैन से अपमान का ऐसे लिया बदला

⏩ टाटा स्टील की भट्ठी में चूना पत्थर डालने का काम किया

अमेरिकी तकनीकी दिग्गज आईबीएम के साथ नौकरी की पेशकश के बावजूद, टाटा ने भारत लौटने का फैसला किया और टाटा स्टील के साथ अपना करियर शुरू किया। उनके परिवार के सदस्य कंपनी के मालिक थे, पर उन्होंने एक सामान्य कर्मचारी के तौर पर कंपनी में काम शुरू किया। उन्होंने टाटा स्टील के प्लांट में चूना पत्थर को भट्ठियों में डालने जैसा काम भी किया।

⏩ रतन टाटा को विमान उड़ाने और कारों का शौक था

रतन टाटा को उड़ने का बहुत शौक था। वह 2007 में F-16 फाल्कन उड़ाने वाले पहले भारतीय बने। उन्हें कारों का भी बहुत शौक था। उनके संग्रह में मासेराती क्वाट्रोपोर्टे, मर्सिडीज बेंज एस-क्लास, मर्सिडीज बेंज 500 एसएल और जगुआर एफ-टाइप जैसी कारें शामिल हैं।

⏩ फोर्ड कंपनी के चेयरमैन ने रतन टाटा का किया अपमान

90 के दशक में जब टाटा समूह ने अपनी कार को लॉन्च किया तब कंपनी की सेल उम्मीदों के अनुरूप नहीं हो पाई। उस वक्त टाटा ग्रुप ने चुनौतियों से जूझ रही टाटा मोटर्स के पैसेंजर कार डिविजन को बेचने का फैसला मन बना लिया। इसके लिए रतन टाटा ने अमेरिकन कार निर्माता कंपनी फोर्ड मोटर्स के चेयरमैन बिल फोर्ड से बात की। बातचीत के दौरान बिल फोर्ड ने उनका मजाक उड़ाते हुए कहा था कि तुम कुछ नहीं जानते, आखिर तुमने पैंसेजर कार डिविजन शुरू ही क्यों किया? अगर मैं यह सौदा करता हूं तो यह तुम्हारे ऊपर एक बड़ा अहसान होगा। फोर्ड चेयरमैन के इन शब्दों से रतन टाटा बहुत आहत हुए पर उन्होंने इसे जाहिर नहीं किया। उसके बाद उन्होंने पैंसेजर कार डिविजन बेचने का अपना फैसला टाल दिया और अपने अंदाज में उनसे इसका बदला लिया।

⏩ नौ साल बाद रतन टाटा ने अपमान का ऐसे लिया बदला

फोर्ड के साथ डील स्थगित करने के बाद रतन टाटा स्वदेश लौट आए और टाटा मोटर्स के कार डिविजन पर ध्यान केंद्रित कर उसे बुलंदियों पर पहुंचा दिया। फोर्ड के मुखिया से हुई बातचीत के करीब नौ वर्षों के बाद टाटा मोटर्स की कारें पूरी दुनिया में अपनी पहचान बना चुकी थीं। कंपनी की कारें दुनिया की बेस्ट सेलिंग कैटेगरी में शामिल थी। वहीं दूसरी ओर, फोर्ड कंपनी की हालत बिगड़ती जा रही थी। डूबती फोर्ड कंपनी को उबारने का जिम्मा टाटा ने लिया और साथ में उन्होंने नौ साल पहले हुए अपने अपमान का बदला भी ले लिया। दरअसल, चुनौतियों से जूझ रहे फोर्ड को उबारने के लिए रतन टाटा ने उसके लोकप्रिय ब्रांड जैगुआर और लैंड रोवर को खरीदने का ऑफर किया। पर इसके वे अमेरिका नहीं गए बल्कि फोर्ड के चेयरमैन को डील के लिए भारत बुलाया।

⏩ फोर्ड चेयरमैन के बदले सुर, की टाटा की तारीफ

अपने अपमान का बदला लेने के लिए रतन टाटा ने बिना कुछ कहे ही ऐसी स्थिति पैदा कर दी जिससे फोर्ड चेयरमैन को अपना सुर बदलना पड़ा। मुंबई में रतन टाटा के ऑफर को स्वीकार करते हुए फोर्ड चेयरमैन बिल फोर्ड ने वही बातें अपने लिए कहीं जो कभी उन्होंने रतन टाटा का अपमान करते हुए कही थी। उस दौरान उन्होंने रतन टाटा को धन्यवाद करते हुए कहा, "आप जैगुआर और लैंड रोवर सीरीज को खरीदकर हमपर बड़ा एहसान कर रहे हैं।"

⏩ 1991 से 2012 तक रहे टाटा ग्रुप के अध्यक्ष

रतन टाटा साल 1991 से लेकर 2012 तक टाटा ग्रुप के अध्यक्ष रहे। 28 दिसंबर 2012 को उन्होंने टाटा ग्रुप के अध्यक्ष पद को छोड़ दिया मगर वे टाटा समूह के चैरिटेबल ट्रस्ट के अध्यक्ष बने रहे। अपने कार्यकाल में वे टाटा ग्रुप के सभी प्रमुख कम्पनियों जैसे टाटा स्टील, टाटा मोटर्स, टाटा पावर, टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज, टाटा टी, टाटा केमिकल्स, इंडियन होटल्स और टाटा टेलीसर्विसेज के भी अध्यक्ष थे। उनके नेतृत्व में टाटा ग्रुप ने नई ऊंचाइयों का हासिल किया।

रतन टाटा

जन्म 28 दिसंबर 1937 को सूरत में हुआ था।

- रतन टाटा जब 10 साल के थे तो इनके माता-पिता अलग हो गए थे।
- रतन टाटा की दादी नवाजबाई ने उनका पालन-पोषण किया।
- रतन टाटा की शुरुआती पढ़ाई कैथेड्रल एंड जॉन कॉनन स्कूल मुंबई से हुई।
- उनकी शुरुआती पढ़ाई बिशप कॉटन स्कूल शिमला से भी हुई है।
- उन्होंने कॉर्नल यूनिवर्सिटी से B.Sc की डिग्री ली है।
- साल 1975 में रतन टाटा ने हार्वर्ड बिजनेस स्कूल से एडवांस मैनेजमेंट प्रोग्राम की पढ़ाई की थी।
- रतन टाटा ने शुरुआत में ही IBM की नौकरी ठुकरा दी थी।
- उन्होंने अपने करियर की शुरुआत साल 1961 में TATA Steel में एक कर्मचारी के तौर पर की थी।
- साल 1991 आते-आते वो टाटा ग्रुप के चेयरमैन बन गए थे।
- रतन टाटा अपने कर्मचारियों से बहुत प्यार करते हैं।

▸▸ पद्म भूषण और पद्म विभूषण अवार्ड से सम्मानित

टाटा संस के पूर्व अध्यक्ष रतन टाटा को साल 2008 में पद्म विभूषण और साल 2000 में पद्म भूषण अवॉर्ड से सम्मानित किया गया था। रतन टाटा को उनकी अध्यक्षता में टाटा समूह को आसमान की बुलंदियों तक पहुंचाने में उनके योगदान के लिए जाना जाता है। आंकड़ों के अनुसार, उनके नेतृत्व में टाटा समूह के राजस्व में 40 गुना से अधिक और लाभ में 50 गुना से अधिक की वृद्धि हुई।

▸▸ कोरोना के दौरान पीएम केयर फंड में दिए 500 करोड़ रुपये

दरियादिली के मामले में भी पूरी उम्र रतन टाटा का कोई सानी नहीं रहा। कोरोना महामारी के दौरान उन्होंने पीएम केयर्स फंड में 500 करोड़ की बड़ी राशि दान की थी। इसके अलावा भी वे कई तरह के सामजिक कार्यों में बढ़-चढ़कर भागीदारी करते रहे। रतन टाटा और उनका कारोबारी समूह हमेशा से ही सामाजिक और धार्मिक कार्यों में आगे रहा। रतन टाटा को हमेशा गरीबों और जरूरतमंदों की मदद करते हुए देखा जाता रहा।

रतन टाटा की प्रेरणादायक बातें, जो बदल सकती हैं आपका जीवन

- जीवन में सिर्फ अच्छी शैक्षिक योग्यता या अच्छा करियर ही काफी नहीं है। बल्कि हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि एक संतुलित और सफल जिंदगी जिएं। संतुलित जीवन का मतलब है हमारा अच्छा स्वास्थ्य, लोगों से अच्छे संबंध और मन की शान्ति, यह सब कुछ अच्छा होना चाहिए।
- दुनिया में इंसान सिर्फ एक मोबाइल के रिचार्ज जैसा है, जो अपनी वैलिडिटी के बाद खत्म हो जायेगा। हर किसी की वैलिडिटी है। अगर आप भाग्यशाली रहे तो कम से कम 50 साल तो जिएंगे ही। इन 50 सालों में सिर्फ 2500 सप्ताहांत होते हैं। क्या तब भी सिर्फ काम ही काम करने की जरुरत है? जीवन को इतना भी कठिन नहीं बनाना चाहिए कि खुशियां हमसे दूर रहें।
- जीवन उतार-चढ़ाव से भरा होता है, इसकी आदत बना लेनी चाहिए।
- दूसरों की नकल करने वाला इंसान थोड़े समय के लिए सफलता तो प्राप्त कर सकता है, लेकिन वह जीवन में बहुत आगे नहीं बढ़ सकता है।
- हमारी गलती सिर्फ हमारी है, हमारी असफलता सिर्फ हमारी है, किसी को इसका दोष नहीं देना चाहिए। हमें गलती से सीखना चाहिए और जीवन में आगे बढ़ना चाहिए।
- टीवी का जीवन असली नहीं होता है और न ही जिंदगी टीवी सीरियल की जैसी होती है। असल जीवन में आराम नहीं होता, सिर्फ और सिर्फ काम होता है।
- अच्छी पढ़ाई करने वाले और कड़ी मेहनत करने वाले अपने दोस्तों को कभी नहीं चिढ़ाना चाहिए। एक समय ऐसा आएगा जब आपको उसके नीचे भी काम करना पड़ सकता है।
- लोहे को कोई भी नष्ट नहीं कर सकता, लेकिन इसकी खुद की ही जंग इसे नष्ट कर देती है। इसी प्रकार एक व्यक्ति को कोई भी नष्ट नहीं कर सकता है, लेकिन खुद की मानसिकता उसे बर्बाद कर सकती है।
- मैं सही फैसले लेने में विश्वास नहीं करता। मैं फैसले लेता हूं और फिर उन्हें सही साबित कर देता हूं।
- अगर लोग आप पर पत्थर मारते हैं, तो उन पत्थरों का इस्तेमाल अपना महल बनाने में आप कर लीजिए।
- अपने जीवन की परिस्थितियों और अपनी प्रतिभाओं के मुताबिक, अपने लिए अवसर एवं चुनौतियों की पहचान करें।

आप इनसे क्या सीखें?

रतन टाटा

1 जीवन उतार-चढ़ाव से भरा है, इसे अपनी आदत बना लो।

2 एक बार वादा करने के बाद चाहे जितनी ही दिक्कतें आए लेकिन अपने वादे को पूरा करें।

3 आपको सिखाने के लिए किसी के पास समय नहीं है। यहां सब खुद सीखना पड़ता है।

4 आपकी गलती सिर्फ आपकी है। किसी को दोष न दें, सीखें और आगे बढ़े।

5 हमेशा ही शांत और सौम्य बने रहें। छोटे से छोटे व्यक्ति से भी प्यार से मिले।

रतन टाटा के 5 बड़े फैसले

रतन टाटा

1 2000 में टाटा ने दुनिया के दूसरे सबसे बड़े चाय के मैन्युफैक्चरर टेटली ग्रुप का अधिग्रहण किया।

2 2001 में टाटा ने अमेरिकन इंटरनेशनल ग्रुप के साथ साझेदारी कर इंश्योरेंस सेक्टर में फिर से एंट्री की।

3 2007 में एंग्लो-डच कंपनी कोरस का अधिग्रहण। यह यूरोप की दूसरी सबसे बड़ी स्टील उत्पादक कंपनी है।

4 2008 में टाटा मोटर्स ने फोर्ड से जगुआर और लैंड रोवर का अधिग्रहण करने का फैसला किया।

5 2021 में एअर इंडिया को खरीदकर 68 सालों बाद एयरलाइन की टाटा ग्रुप में दोबारा एंट्री कराई।

कामयाबी के 5 राज

रतन टाटा

1. कंपनी के तौर-तरीके और कई अहम चीजों को समझने के लिए फैक्ट्री के कर्मचारी की तरह काम करना।

2. टाटा का मानना है कि जो लोग आप पर पत्थर फेंकते हैं, उसका उपयोग स्मारक बनाने में करना चाहिए।

3. अगर तेज चलना चाहते हैं, तो अकेले चलें। पर अगर आप लंबा चलना चाहते हैं, तो सबको साथ लेकर चलें।

4. रतन टाटा सही फैसले लेने में विश्वास नहीं करते। वह फैसले लेते हैं और फिर उन्हें सही साबित करते हैं।

5. रतन टाटा मानते हैं कि किसी व्यक्ति को उसके खुद के माइंडसेट के अलावा कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकता।